Class IX(20.10.24)
Answer key

I.

1. विदुषी
2. खड़ी बोली हिंदी
3.मेघ रुपी दामाद को

II

1. सुभद्रा कुमारी चौहान महादेवी वर्मा से सीनियर थी। दोनों की भेंट छात्रावास में हुई थी ।सुभद्रा कुमारी के अपनेपन ने महादेवी वर्मा पर बहुत प्रभाव डाला। सुभद्रा कुमारी चौहान खड़ी बोली में कविताएं लिखती थीं।उन्हीं से प्रेरित होकर महादेवी वर्मा भी खड़ी बोली में कविताओं की तुकबंदी करने लगी थी। सुभद्रा कुमारी चौहान ने हीपूरे हॉस्टल की लड़कियों को यह बताया कि महादेवी कविताएं लिखती है।इस प्रकार महादेवी वर्मा सुभद्रा कुमारी के व्यक्तित्व से प्रभावित थी।
2. महादेवी जी को कवि सम्मेलन में कविता सुनाने पर चाँदी का सुंदर कटोरा इनाम के रूप में मिला था। इसी बीच गाँधीजी आनंद भवन में आए, तो महादेवी वह कटोरा उन्हें दिखाने चली गई ।वह इसे दिखाकर प्रशंसा पाना चाहती थी,पर बापू ने कविता की कोई बात नहीं की और वह कटोरा अपने लिए ले लिया। कविता की बात ना करने पर महादेवी को दुख हुआ।
3. 'मेघ आए' कविता में बादलों को एक शहरी दामाद के रूप में चित्रित किया गया है। जिस प्रकार कोई दामाद खूब सज सँवर कर अपने ससुराल आता है, उसी प्रकार में मेघ भी पानी बिजली भरकर गांव में आए हैं। जिस प्रकार गांव में मेहमान का भरपूर स्वागत किया जाता है , उसी प्रकार मेघों का भी गांव के लोग भरपूर स्वागत कर रहे हैं।
4. प्रिया- प्रिया के मिलन के अवसर पर भावुकतावश आनंद के आँसू आ जाना स्वाभाविक बात है। यहां मेघ नायक के रूप में और लता नायिका के रूप में दर्शायी गई है और उनके मिलन होने से दोनों की आँखों से आँसू बहने लग जाते हैं। इसी प्रकार मेघों के आने से बूंदाबांदी के रूप में प्रेम के आँसू है।

III

I. शहरी मेहमान के आगमन पर गाँव में उल्लास छा जाता है। गांव के बच्चे मेहमान को देखकर नाचने लगते है। घरों की खिड़कियाँ-दरवाजे खुलने लग जाते हैं। लोग जिज्ञासा पूर्वक शहर के मेहमान को देखने लग जाते हैं। बूढ़े लोग उसका आदर करने लगते हैं ।स्त्रियां तिरछी नजर उठाकर उसे देखने लगतीं हैं ।कुछ औरतें अपना घाघरा उठा कर भागने लगती हैं। नायिका दरवाज़े की ओट में देर से आने का उलाहना देती है। घर का नौकर पारात में पानी भर कर अपना हर्ष प्रकट करता है। फिर नायक- नायिका का चिर प्रतीक्षित मिलन हुआ और सारे भ्रमों का निवारण हो गया और उनका आपसी मिलन हो जाता है।
II. छात्रावास के दिनों के वातावरण के बारे में लेखिका बताती है- उस समय सांप्रदायिकता नहीं थी ।जो अवधी की लड़कियाँ थी, वेआपस में अवधी बोलती थी; बुंदेलखंड की लड़कियां बुंदेली बोलती थी। कोई अंतर नहीं था और हम हिंदी पढ़ते थे। उर्दू भी हमको पढ़ाई जाती थी परंतु आपस में हम अपनी भाषा में ही बात करते थे ।हम सभी एक मेस में ही खाना खाते थे। एक प्रार्थना में खड़े होकर एक जैसी ही प्रार्थना करते थे ।आपस में कोई विवाद नहीं होता था।